जॉन ड्यूवी के अनुसार, "सामाजिक परिवर्तन एक ऐसा शब्द हैं जो सा प्रक्रियाओं, सामाजिक प्रतिमानों, सामाजिक अन्तःक्रिया या सामाजिक संगठन के पहलू में होने वाले अन्तर अथवा हेर–फेर हेतु प्रयुक्त होता है।"

किंग्सले डेविस के अनुसार, "सामाजिक संरचना तथा उसके कार्यों में होने परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहते है।"

मैकाइवर एवं पेज के अनुसार, "सामाजिक संरचना या सम्बन्धों में होने वाले प को ही सामाजिक परिवर्तन कहते है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि समय के साथ–साथ प्रत्येक स सामाजिक संगठन, संस्था, विभिन्न सामाजिक प्रक्रियाओं में परिवर्तन होना ही साम परिवर्तन कहलाता हैं। सामाजिक परिवर्तन वह स्थिति है जिसमें समाज स्वीकृत स क्रियाओं, प्रतिमानों एवं संस्थाओं का रूप इस प्रकार परिवर्तित हो जाता है कि उन अनुकूलन करने की समस्या लोगों में उत्पन्न हो जाती है।

2.3.2. सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएँ (Characteristics Social Change)

सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएँ या लक्षण इस प्रकार है–

1) **समाज का एक मौलिक तत्त्व है (A fundamental element of Society**
परिवर्तन समाज का मौलिक तत्त्व है। प्रत्येक समाज मे परिवर्तन अवश्य ही होत हालांकि विभिन्न समाज में परिवर्तन की मात्रा भिन्न–भिन्न हो सकती है, प सामाजिक परिवर्तन न हो इसकी कोई सम्भावना नही होती है। समाज सतत स परिवर्तनशील रहा है।

2) **परिवर्तन की गति में भिन्नता होती है (Variation in the Pace of Change**
एक समाज के मूल्यों तथा मान्यताओं पर उसमें होने वाले परिवर्तन की गति नि करती है। आधुनिक समाज में परिवर्तन, परम्परागत समाज की तुलना में अधिक है जो हमे स्पष्ट रूप से दिखायी देते हैं।

3) **सामाजिक परिवर्तन को मापना असम्भव है (Social Change is Impossible Measure)**–सामाजिक परिवर्तन को मापना सम्भव नही है। भौतिक वस्तुओं में ह वाले परिवर्तन का एक बार मापना सम्भव हो सकता है। परन्तु अभौतिक वस्तुओं होने वाले परिवर्तन का मापना असम्भव होता है। अभौतिक वस्तुएँ प्रकृति में गुणा होती है जैसे–मनुष्य के विचार, मनोवृत्तियों तथा रीतियों में परिवर्तन। ये परि अमूर्त होते हैं और इन्हें मापना सम्भव नही है।

4) **निश्चित भविष्यवाणी करना असम्भव है (It is Impossible to make a Defin Prediction)**–सामाजिक परिवर्तन के बारे मे अधिक से अधिक अनुमान ही लग सकता है, निश्चित रूप से भविष्यवाणी नही की जा सकती।

5) **सामाजिक परिवर्तन का चक्रीय तथा रेखीय रूप (Cyclical and Linear for of Social Change)**–सामाजिक परिवर्तन दो रूपो में होता है चक्रीय तथा रेखी चक्रीय परिवर्तन के अन्तर्गत वही स्थिति जो परिवर्तन से पूर्व आरंभ मे थी, व स्थिति पुनः आ जाती है। **उदाहरण के लिए,** पूर्व में पैण्ट की मोहरी चौड़ी ह जाती थी। कुछ समय बाद संकरी मोहरी की पैण्ट पहनी जाने लगी। आज चौड़ी मोहरी की पैण्ट पहनने का फैशन आया है। हालांकि रेखीय परिवर्तन एक दिशा में होता है। इसमें पुनरावृत्ति नही होती है।

2.3. सामाजिक परिवर्तन (SOCIAL CHANGE)

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है, सब कुछ परिवर्तनशील है इसलिए समाज और संस्कृति भी परिवर्तनशील है। बिना परिवर्तन के गतिशीलता सम्भव नहीं है और न बिना गतिशीलता के समाज का अस्तित्व। सर्वप्रथम **आगस्त कॉम्ट** (August Comte) ने सामाजिक परिवर्तन का उल्लेख किया लेकिन इस **सामाजिक परिवर्तन को** उन्होंने **सामाजिक गतिकी** (Social dynamics) कहा था, परन्तु **सामाजिक परिवर्तन का समाजशास्त्री कार्ल मार्क्स** (Karl Marx) को माना जाता है। परिवर्तन का तात्पर्य अन्तर से है तथा समाज के संदर्भ में परिवर्तन का आशय सामाजिक दशाओं या स्थितियों में अन्तर से है। यह अन्तर दो संदर्भों में हो सकता है–

1) स्थान सापेक्ष
2) समय सापेक्ष

इससे यह है तात्पर्य कि दो समाजों, दो समूहों में अन्तर हो सकता है या एक ही समाज, समूह में समय के दो बिन्दुओं में अन्तर हो सकता है। लेकिन सामान्यतः सामाजिक परिवर्तन को समय सापेक्ष ही माना जाता है इसलिए समायान्तर के कारण परिवर्तन को **द्विकालिक** (Dychronic) **या बहुकालिक** माना जाता है, एक कालिक नहीं।

2.3.1. सामाजिक परिवर्तन का अर्थ एवं परिभाषाएँ (Meaning and Definitions of Social Change)

सामाजिक परिवर्तन दो शब्दों से मिलकर बना है– समाज और परिवर्तन। समाज का अर्थ केवल व्यक्तियों का समूह नहीं है, बल्कि समूह में रहने वाले व्यक्तियों के आपस में जो सम्बन्ध हैं, उन सम्बन्धों के संगठित रूप को भी समाज कहतें हैं। समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है। परिवर्तनों का अर्थ है– बदलाव अर्थात् पहले की स्थिति में बदलाव। पहले की स्थिति तथा आज की स्थिति में आने वाला अन्तर या बदलाव ही परिवर्तन है। इस प्रकार समाज की पहले की स्थिति और बाद की स्थिति में अन्तर होना ही सामाजिक परिवर्तन है। सामाजिक संगठन, सामाजिक ढाँचे, सामाजिक सम्बन्धों या समाज के रहन–सहन के ढंग, रीति–रिवाजों, मूल्यों और विश्वासों आदि में परिवर्तन ही, सामाजिक परिवर्तन कहलाता है।

र जोन्स के अनुसार, "सामाजिक परिवर्तन वह शब्द हैं, जो सामाजिक प्रक्रियाओं तथा सामाजिक संगठन के किसी अंग में अन्तर अथवा रूपान्तर को वर्णन करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

ॉन्सन के अनुसार, "सामाजिक परिवर्तन को व्यक्तियों के कार्य एवं विचार करने के ढंगों में उत्पन्न होने वाला परिवर्तन कहकर परिभाषित किया जा सकता है।"

जॉन ड्यूवी के अनुसार, "सामाजिक परिवर्तन एक ऐसा शब्द है जो प्रक्रियाओं, सामाजिक प्रतिमानों, सामाजिक अन्तःक्रिया या सामाजिक संगठन पहलू में होने वाले अन्तर अथवा हेर–फेर हेतु प्रयुक्त होता है।"

किंग्सले डेविस के अनुसार, "सामाजिक संरचना तथा उसके कार्यों में परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहते है।"

मैकाइवर एवं पेज के अनुसार, "सामाजिक संरचना या सम्बन्धों में होने वा को ही सामाजिक परिवर्तन कहते है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि समय के साथ–साथ प्रत्येक सामाजिक संगठन, संस्था, विभिन्न सामाजिक प्रक्रियाओं में परिवर्तन होना ही परिवर्तन कहलाता हैं। सामाजिक परिवर्तन वह स्थिति है जिसमें समाज स्वीकृत क्रियाओं, प्रतिमानों एवं संस्थाओं का रूप इस प्रकार परिवर्तित हो जाता है कि अनुकूलन करने की समस्या लोगों में उत्पन्न हो जाती है।

2.3.2. सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएँ (Characteristi Social Change)

सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएँ या लक्षण इस प्रकार है–

1) **समाज का एक मौलिक तत्त्व है (A fundamental element of So** परिवर्तन समाज का मौलिक तत्त्व है। प्रत्येक समाज मे परिवर्तन अवश्य ही हालांकि विभिन्न समाज में परिवर्तन की मात्रा भिन्न–भिन्न हो सकती है सामाजिक परिवर्तन न हो इसकी कोई सम्भावना नही होती है। समाज सतत परिवर्तनशील रहा है।

2) **परिवर्तन की गति में भिन्नता होती है (Variation in the Pace of Cha** एक समाज के मूल्यों तथा मान्यताओं पर उसमें होने वाले परिवर्तन की गति करती है। आधुनिक समाज में परिवर्तन, परम्परागत समाज की तुलना में अधिक है जो हमे स्पष्ट रूप से दिखायी देते हैं।

3) **सामाजिक परिवर्तन को मापना असम्भव है (Social Change is Impossib Measure)** –सामाजिक परिवर्तन को मापना सम्भव नही है। भौतिक वस्तुओं वाले परिवर्तन का एक बार मापना सम्भव हो सकता है। परन्तु अभौतिक वस्तु होने वाले परिवर्तन का मापना असम्भव होता है। अभौतिक वस्तुएँ प्रकृति में गुण होती है जैसे–मनुष्य के विचार, मनोवृत्तियों तथा रीतियों में परिवर्तन। ये परि अमूर्त होते हैं और इन्हें मापना सम्भव नही है।

4) **निश्चित भविष्यवाणी करना असम्भव है (It is Impossible to make a Defi Prediction)** –सामाजिक परिवर्तन के बारे मे अधिक से अधिक अनुमान ही ल सकता है, निश्चित रूप से भविष्यवाणी नही की जा सकती।

5) **सामाजिक परिवर्तन का चक्रीय तथा रेखीय रूप (Cyclical and Linear fo of Social Change)** –सामाजिक परिवर्तन दो रूपो में होता है चक्रीय तथा रेखी चक्रीय परिवर्तन के अन्तर्गत वही स्थिति जो परिवर्तन से पूर्व आरंभ मे थी, स्थिति पुनः आ जाती है। **उदाहरण के लिए,** पूर्व में पैण्ट की मोहरी चौड़ी हुआ जाती थी। कुछ समय बाद संकरी मोहरी की पैण्ट पहनी जाने लगी। आज चौड़ी मोहरी की पैण्ट पहनने का फैशन आया है। हालांकि रेखीय परिवर्तन एक दिशा में होता है। इसमें पुनरावृत्ति नही होती है।